कला की कद्र

गोविंद शर्मा

हमारे शहर के सेठ गुप्तानंद कला प्रेमी हैं। जब भी कोई सुंदर सा चित्र, मूर्ति या कुछ और बनाकर लाता है सेठ जी उस कलाकार से वह कलावस्तु खरीद लेते हैं। पूरी कीमत देते हैं। यहां तक कि कुछ कला- वस्तुओं के लिए अलग से इनाम भी देते हैं।

एक दिन एक कलाकार मिट्टी से बनाकर हाथी की मूर्ति थाली में रखकर लाया। सेठ जी को वह मूर्ति कला का सुंदर नमूना लगी। उन्होंने उसे खरीद लिया। उन्हें बताया गया कि यह केवल मिट्टी से बनी है। इस पर रंग नहीं किया गया है।इसका हाथी जैसा यह रंग मिट्टी का ही रंग है, पर मूर्ति है बहुत कमजोर। जरा सी ठेस लगने पर टूट सकती है।

सेठ जी बोले- तुम फ़िक्र मत करो मैं इसे संभाल कर रखूंगा, ताकि मैं , केवल मेरे पास आने वाले मेरे मित्र संबंधी ही इसे देखें, बल्कि भावी पीढ़ियां भी कला के इस अनुपम नमूने को देखें। उस वक्त सेठ जी के पास उनके कुछ मित्र भी बैठे थे। उन्होंने भी मूर्ति की प्रशंसा की। सेठ जी ने मूर्तिकार को कुछ रुपए इनाम में दिए और बोले - इसे संभाल कर रखने की जिम्मेदारी अब मेरी है। इसलिए मैं इसे अपने हाथों से शोकेस में रखूंगा। सेठ जी थाली में रखी मूर्ति लेकर चले।

उस समय उनका एक नौकर पानी भरे गिलास ट्रे में रखकर कमरे में आया। कमरे के फर्श पर बिछे कालीन के एक कोने में सेठ जी का पैर कुछ इस तरह उलझा कि वह गिरने को हो गए।सेठ जी के मित्र भाग कर आए और उन्होंने सेठ जी को गिरने से पहले ही पकड़ लिया। मगर मूर्ति रखी थाली उनके हाथों से छूट गई।थाली को नीचे गिरते देखकर मूर्तिकार घबरा गया।पर पानी लेकर कमरे में आए नौकर ने हाथ की ट्रे को एक तरफ फेंका और थाली को लपक कर पकड़ लिया। थाली और मूर्ति जमीन पर गिरने से बच गए। यह देखकर मूर्तिकार ने संतोष की सांस ली। सेठ जी ने पुनः थाली को संभाल लिया।

सेठ जी के मित्र सेठ जी की तारीफ करने लगे।वाह, आज आपके कुशल हाथों ने एक कीमती कलावस्तु को नष्ट होने से बचा लिया।

जब सारे मित्र सेठ जी की सराहना कर रहे थे तब मूर्तिकार ने देखा सेठ जी का वह नौकर नीचे गिरे गिलास उठा रहा है। फर्श पर गिरा पानी साफ कर रहा है। मूर्तिकार बोला -सेठ जी, इस कलात्मक हाथी को बनाने के लिए मेरी सराहना हुई थी ।आपने अच्छी कीमत देकर कर इसे को खरीदा और इसे भावी पीढियों के लिए सुरक्षित रखने की सोची -यह सब अच्छी बातें हैं।पर इस कलाकृति को बचाने का श्रेय आपके इस सेवक को भी जाता है। यदि वह अपने हाथ में पकड़ी ट्रे को छोड़कर इस मूर्ति वाली थाली को ने थामता तो यह कलाकृति आज ही नष्ट हो जाती। मैं दूर खड़ा देख रहा था आपके मित्र आपको गिरने से बचाने में लगे थे।कलाकृति तो इस सेवक के कारण ही बची है।मुझे मिला आज का इनाम मैं इसे सौंपता हूं मेरे विचार में कलाकृति को बनाने, उसे खरीदने वाले से भी बड़ा उसे संभालने वाला होता है।

सेठ जी ने कहा- मूर्तिकार जी पहले तो मेरे मन में आपकी कलाकारी के प्रति ही सम्मान था। अब आपके उच्च विचारों से ज्यादा प्रभावित हूं। आपकी बात ठीक है। महत्वपूर्ण है विरासत को संभाल कर रखना। आप अपना इनाम अपने पास रखें। मेरे इस सेवक को मैं पर्याप्त सम्मान और पुरस्कार दूंगा। मूर्तिकार की खुशी का अब कोई ठिकाना नहीं था।